223क लेख1–ओसामा का मारा जाना और भारत

ख लेख2–अन्ना जी के आंदोलन का ज्वार भाटा और वर्तमान स्थिति

ग लेख3– बुद्धदेव भट्टाचार्य का वामपंथ और मेरी चार वर्ष पूर्व की भविष्यवाणी

घ लेख4–आचार्य नरेन्द्र देव और डा0 लोहिया, एक समीक्षा

च लेख 5– शशि कुमार झा जनसत्ता सात मई से 16अच्छे लेख –

छ प्रश्न–1 डॉ0 सेवाराम पाल रेडियो कॉलोनी के सामने पन्ना रोड, छतरपुर म0प्र0

ज प्रश्न–2टमक टलंजीपज ठंससंझी हंती ए तिपकं इंकए ींतपलंदं

झ संक्षिप्त टिप्पणी1 ओसामा का दफनाना और दिग्विजय सिंह–

ट संक्षिप्त टिप्पणी2 पेट्रोल की मूल्य वृद्धि एक सराहनीय कदम

ठ अपनो से अपनी बात

ड उत्तरार्ध

ओसामा का मारा जाना और भारत

पिछले दिनों आतंकवाद का सबसे बडा समर्थक, अंतर्राष्टीय आतंकवादी का पाकिस्तान मे मारा जाना आतंकवाद के लिये एक गंभीर झटका थी । यह घटना और भी विशेष बन जाती है जब ओसामा पाकिस्तान सेना के कैम्प के पास एक अच्छे भवन मे आराम से निश्ंचित रहता हुआ मारा गया। इस घटना का महत्व उस समय चरम पर पहुच गया जब अमेरिका ने एक पक्षीय निर्णय लेते हुए पाकिस्तान को बिना बताये उसे मारकर पाकिस्तान से बाहर ले जाने की कार्यवाही की । घटना की सही जानकारी तो धीरे धीरे कि प्रकाश मे आयेगी किन्तु यह अनुमान स्पष्ट है कि ओसामा पाकिस्तान सरकार के एक शक्तिशाली भाग की जानकारी मे वहॉ था और उस भाग को इस कार्यवाही से बिल्कुल ही अंधेरे मे रखा गया। दूसरी ओर अमेरीकी आक्रमण की अस्पष्ट जानकारी पाकिस्तान सरकार के एक भाग को अवश्य थी भले ही उसे यह न पता हो कि यह कार्यवाही कहॉ होनी है और किस पर होनी है । अमेरिका प्रायः ड्रोन हमले पाकिस्तान मे करता रहा है ।संभव है कि ऐसी ही कोई अस्पष्ट जानकारी अमेरिका ने दे रखी हो । क्योकि सैनिक छावनी के इतने पास ऐसा भीषण आक्रमण बिना विश्वास मे लिये संभव नही था।

इस आक्रमण ने कई प्रश्न खडे कर दिये है। क्या अमेरिका को ऐसा अधिकार था? क्या अमेरिका को दाउद के लिये भी ऐसा करना चाहिये? क्या अब आतंकवाद के दिन लद रहे है? आदि आदि

यदि पाकिस्तान को यह अधिकार था कि वह ओसामा को इस तरह छिपा कर रखे तो अमेरिका को भी अधिकार था कि वह अपने अपराधी को खोज निकाले। राष्ट्रीय सीमाओं की नैतिकता अपराधियो को छिपाने के लिये नही होती। ऐसा धोखा यदि किसी मित्र के साथ किया जाय तो और भी गलत है और यदि ऐसी चालवाजी ऐसे मजबूत देश के साथ की जाय जिस पर हम आश्रित है तो यह तो बिल्कुल मूर्खता ही कही जायगी। पाकिस्तान को चुपचाप यह कह देना चाहिये कि यह हमारी नाकामी है कि हम ओसामा को आज तक खोज नही सके । अमेरिका ने जो किया हम उसका समर्थन करते है। यदि हमें पूर्व मे पता होता तो हम इस कार्यवाही मे पूरा पूरा सहयोग भी करते । हम अपनी कमजोरी के लिये शर्मिन्दा है। हम अब भी वचन देते है कि भविष्य मे हम और सतर्क रहेगें । दुनियॉ जानती है कि पाकिस्तान की सरकार ऐसा नही कह सकती क्योकि वह अपने देश मे भी कट्टरवादी विचार धारा से खुलकर विरोध नही झेल सकती। जिस तरह पाकिस्तान के जन मानस मे हिंसा और आतंकवाद के द्वारा अपना धार्मिक राजनैतिक विस्तार पर विश्वास बना हुआ है वह विश्वास पाकिस्तान सरकार को कभी ऐसा नही करने देगा।

एक प्रश्न उठता है कि दुनियॉ का मुस्लिम बहुमत ओसामा हत्या को किस तरह देखता है? पाकिस्तान का मुस्लिम बहुमत लादेन के पक्ष मे है। ''उनकी नजर मे लादेन ने कोई ऐसा काम नही किया जिसके लिये उसकी निन्दा की जाय। जिनका इस्लाम पर विश्वास नही है उन्हे किसी भी तरह इस्लाम के साथ जोडना या उसे खतम करना तो पुण्य कार्य हैं । ऐसे पुण्य कार्य मे बाधा पहुचाने वाला अमेरिका ही दोषी है न कि ओसामा । यदि इस तरह अमेरिका बढता रहा तो दुनियॉ के मुसलमान बनाने का सपना तो सपना ही रह जायगा। या तो दुनियॉ के अन्य धर्मावलम्बी चुपचाप इस्लाम स्वीकार कर ले अन्यथा उन्हे स्वीकार कराने के लिये हमारे लोग मरने तक तैयार है''। भारत के मुसलमान इस मामले मे विभाजित है। वे वैचारिक स्तर पर तो आोसामा को गलत मानते है किन्तु इनकी इस्लामिक भावना जोर मारती है तब वे सब कुछ कहने के बाद भी परन्तु लगातार इसराइल की बात बीच मे घुसा देते है। यह परन्तु लगाना इनकी नई आदत नही है । यदि भारतीय संदर्भ हो तो परन्तु के बाद कश्मीर जोड दिया जाता है और विश्व संदर्भ हो तो इसराइल।

भारत के गैर मुसलमान ओसामा के मारे जाने से खुश है किन्तु स्वतंत्रता के बाद साठ वर्षो से अमेरिका की आलोचना करने की ऐसी आदत पडी हुई है जो छूटती ही नही। आम तौर पर कहते है कि अमेरिका ने ठीक किया जो ओसामा को पाकिस्तान मे घुस के मारा। परन्तु अमेरिका दाउद या हाफिज सइद को न मारकर पक्षपात कर रहा है । कितनी बचकाना बात है यह । ओसामा अमेरिका का शत्रु था और दाउद हाफिज सइद भारत का। क्या भारत कभी अमेरिका के समर्थन में खडा रहा? जब तक अमेरिका

और रूस चीन के बीच शीत युद्ध चलता रहा तब तक तो भारत अमेरिका के विरूद्ध वातावरण बनाकर उससे कुछ न कुछ सहायता लेता रहता था। अब स्थितियॉ बदल गई है। अमेरिका के नेतृत्व मे विश्व व्यवस्था एक ध्रुवीय हो गई है । अब अमेरिका को चुनौती इस्लामिक कट्टरवाद से है। भारत यदि अमेरिका से कुछ चाहता है तो उसे तीन स्थितियो मे से एक साफ करनी होगी कि भारत अमेरिका का सहयोगी राष्ट्र है, मित्र राष्ट्र है या तटस्थ राष्ट्र है। भारत अमेरिका का सहयोगी तो न रहा है न है । भारत इस समय कभी मित्रवत व्यवहार करता है तो कभी तटस्थ । वैसे मनमोहन सिंह जी के आने के बाद भारत अमेरिका संबंध मित्रता की ही दिशा मे बढ रहे है। इरान क मामले मे भारत ने मित्रता दिखाई किन्तु लीबिया के विषय में हो रहे मतदान मे फिर भारत तटस्थ हो गया । फिर भी कुल मिलाकर भारत सरकार धीरे धीरे मित्रता की राह पर ही दिख रही है। ऐसी स्थिति मे मनमोहन सिंह का हक है कि वे अमेरिका से इस संबंध मे कुछ उम्मीद करें।

ओसामा के मरने के बाद अमेरिका से प्रश्न पूछने और नसीहत देने वालो मे सबसे अधिक आवाजें विपक्ष की ओर से उठ रही है जिनकी न कोई समीक्षा कर रहा हैं न उत्तर दे रहा है। साम्यवादी आवाजे तो पेशेवर आवाजें है जिनकी समीक्षा अनावश्यक है किन्तु भाजपा की आवाजो की तो समीक्षा आवश्यक है क्योकि भाजपा तो स्वयं को राष्ट्रवादी दल के रूप मे बताती रहती है। भाजपा की नजर मे भारत को अमेरिका गुट मे होना चाहिये या मित्र के रूप मे या तटस्थ? स्वाभाविक है कि जैसा हम मानेगें वैसे ही व्यवहार की अमेरिका से उम्मीद भी रखनी चाहिये। जिस समय भारत अमेरिका परमाणु बिजली समझौता हो रहा था तथा भारत सरकार उस समझौते के पक्ष मे थी तब भाजपा ने खुलकर इस प्रस्ताव का विरोध किया। यहॉ तक कि उसने साम्यवादियों का साथ दिया। विरोध की पहल साम्यवादियों की थी, भाजपा की नही। सबसे दुखद बात यह रही कि विपक्ष ने इरान के धर्मगुरू से भी इस मुहिम मे फोन करके मदद मांगी। भाजपा उत्तर दे कि उसका इस निचले स्तर तक का अमेरिका विरोध क्या उसे अमेरिका से प्रश्न करने लायक छोडता है? अमेरिक से प्रश्न करने के पूर्व भाजपा स्पष्ट करे कि उसकी नजर मे अमेरिका हमारा नता है या मित्र या हम तटस्थ है। मै जानता हूॅ कि भाजपा वाले जनता के बीच अमेरिका को गाली देते रहते है और अन्दर अन्दर उसकी चापलूसी भी करते रहते है किन्तु अंदर क्या है वह अंदर है और चर्चा बाहर की हो रही है।

बहुत से विद्वानो ने भारत सरकार को यह सलाह दी कि वह भी अमेरिका की तरह ही दाउद या हाफिज सइद पर आक्रमण करे । ऐसे लेखकों का स्तर बहुत बचकाना दिखता है । क्याा भारत और अमेरिका की सामाजिक स्थिति समान है? क्या पाकिस्तान भारत के सामने उसी तरह झुक जायगा जैसा अमेरिका के समक्ष झुका? क्या चीन उसी तरह चुप रह जायगा जिस तरह लादेन के मामले मे रहा? क्या दाउद उस तरह अंतर्राष्टीय ख्याति प्राप्त आतंकवादी है जैसा ओबामा। शेखचिल्ली के समान लिखने का औचित्य क्या है? मै दुनियॉ का सबसे बहादुर व्यक्ति हूॅ क्योकि आज तक मुझे कोई नही मार पाया। प्रश्न उठता है कि तुमने जीवन मे ऐसा अवसर कहॉ पैदा किया कि किसी के साथ ऐसे टकराव की परीक्षा हो । इसलिये अनावश्यक लिखना घातक हो सकता है । आप विचारक है, चारण या भाट नही जो युद्ध के समय सेना या राजा का मनोबल बढाने के काम मे संलग्न हो।

कुछ लोग कहते है कि भारत पाकिस्तान के साथ वार्ता बन्द करे। विचारणीय प्रश्न यह है कि ओसामा का आतंकवाद धार्मिक उद्देश्यो के लिये था या राष्ट्रीय उद्देश्यो के लिये? आतंकवाद के तीन चेंहरे वर्तमान मे दिखते है (1) इस्लामिक विचारधारा को ढाल बनाकर (2) मार्क्सवादी विचार धारा को आधार बनाकर (3) संघ परिवार के संगठनो के साथ जुडकर । दुनियॉ मे शान्ति प्रिय लोगो की संख्या इन तीनो की मिली जुली संख्या से भी कई गुना ज्यादा है फिर भी ये तीनों शान्ति प्रिय लोगों पर हावी रहते है क्योकि ये लोग शान्ति प्रिय लोगो को बाटकर रखते है । इन तीनों मे भी संघ परिवार की चर्चा व्यर्थ है क्योकि एक तो उसका प्रभाव सिर्फ भारत तक सीमित है दूसरे उसे हिन्दु बहुमत का भी समर्थन प्राप्त नही। साम्यवादी आतंक सिर्फ नक्सलवाद के रूप मे जीवित है। विचार धारा के रूप मे तो समाप्ति की ओर ही है। इस्लामिक आतंकवाद अभी भी एक नम्बर पर जीवित है। यह आतंकवाद पाकिस्तान सरकार के लिये काम नहीं कर रहा बल्कि पाकिस्तान सरकार इस्लामिक आतंकवाद से दबी हुई है। भारत की रणनीति क्या होनी चाहिये? पाकिस्तान मजबूरी मे आतंकवादियो की मदद कर रहा है। हम पाकिस्तान सरकार को कभी डाटकर तो कभी पुचकार कर आतंकवादियो से दूर करने की कोशिश करें या उसे ऐसा झापड मार दे कि वह आतंकवादीयों की शरण मे चला जाय। ओसामा के मारे जाने के बाद पाकिस्तान मे उग्र विरोध प्रदर्शन हुए । कश्मीर मे गिलानी के नेतृत्व मे आंशिक प्रदर्शन हुए और भारत मे इक्का दुक्का स्थानो पर नमाज तक सीमित रहे। दुनियॉ के अन्य मुस्लिम देशो मे भी पाकिस्तान सरीखा धार्मिक कट्टरवाद नहीं दिखा ।कश्मीर की समस्या भी पाकिस्तानी विस्तारवाद न होकर इस्लामिक विस्तारवाद के साथ जुडी है जिसके साथ पाकिस्तान है । ऐसी स्थिति मे पाकिस्तान पर सारा ध्यान लगाना और इस्लाम को पीछे करने की अपेक्षा इस्लाम पर ध्रुवीकरण करके पाकिस्तान के साथ चर्चा जारी रखना ही उचित कदम दिखता है । आक्रमण कर दो, मार दो, सबक सिखा दो, बात बन्द कर दो जैसी बचकानी बाते बन्द होनी चाहिये।

अब समीक्षा करे इस्लाम की । जब इस्लाम साम्यवाद तथा संघ परिवार विस्तार पर थे तथा शान्ति प्रिय लोग बटे हुए थे तब तीनो को आपस मे भिडाकर रखना उचित था किन्तु अब आतंकवाद के दो पाये कमजोर हो चुके है । तीसरा इस्लामिक आतंकवाद निर्णायक चोट खा रहा है। जिस तरह ओसामा के पक्ष मे ठंडी प्रतिक्रिया हुई उससे स्पष्ट है कि इस्लाम के भीतर मे संघे शक्ति कलौ युगे का मनोबल टूटा है। अब शान्ति प्रिय लोगों की मजबूरी नही कि वे इन तीनो को लडाने की भेद नीति पर काम करें । समय आ रहा है कि कट्टरवाद को चुनौती दे दी जाय। यदि इस्लामिक कट्टरवाद को ओसामा सरीखे ही एक दो और झटके लग गये ता तीनो को चुनौती देना और भी आसान हो जायगा। हम सभी मुसलमानों को कटटरवादी मानने की पुरानी रणनीति में अब संशोधन करें। अब इस्लाम और मुसलमान का अन्ध विरोध न करके कट्टरवाद का विरोध करे चाहे वह साम्यवादी वामपंथी कट्टरवाद हो या संघ परिवार का चाहे इस्लामिक । अब हमारी मजबूरी नहीं कि हम कट्टरवाद को अलग अलग रूपो मे देखे।

इस्लाम तथा मुसलमानो का मामला अभी अस्पष्ट है । अब मुसलमानो को यह बात अन्तिम रूप से स्वीकार कर लेनी चाहिये कि दुनियॉ शान्ति पूर्ण सह अस्तित्व की ओर बढ रही है। अब तक उन्होने संगठन के बल पर आगे बढने का जो लाभ उठाया है उसमे अब आगे झापड भी लग सकता है । अच्छा हो कि इस्लाम अपना पुराना मनोबल गिराकर शान्तिपूर्ण सहः अस्तित्व की राह पर चलना शुरू करे। हमारा भी कर्तब्य है कि हम मुस्लिम विरोध की एक पक्षीय भाषा मे संशोधन करके गुण दोष के आधार पर उनकी विवेचना करने की आदत डाले।

अन्ना जी के आंदोलन का ज्वार भाटा और वर्तमान स्थिति

अन्ना जी के आंदोलन का ज्वार आया। बहुत तेज गति से सुनामी सरीखे लहरें उठी । नये कीर्तिमान कायम हुए। सरकार झुकी, राजनीति झुकी, संसदीय लोकतंत्र झुका, और वापसी को बीच मे ही रोकने की भरसक कोशिश की किन्तु वापसी की गति इतनी तेज थी कि प्रयत्न करने वाले कहीं भी टिक ही नही सकें। ज्वार जहॉ से शुरू हुआ था वही जाकर रूका । छोड गया एक इतिहास जिसकी समीक्षा कर कर के हम चर्चाऍ करते रहेगें

आंदोलन आश्चर्य जनक तूफान की गति से बढा और उससे भी ज्यादा तेज गति से वापस हुआ, इसका कारण क्या है और क्या दिखता है? भारत मे मुख्य रूप से दो विचार धाराओं के बीच ध्रुवीकरण है (1) वामपंथी विचार धारा (2) संघ परिवार की विचार धारा । जो भी लोग सामाजिक राजनीति से जुडे हुए है उनका इन दो मे से किसी न किसी एक से जुडाव अवश्य है। समाजवादियों का स्वाभाविक ध्रुव वामपंथ है किन्तु डा0 लोहिया स्वयं वामपंथी नही थें इसलिये ये लोग समय समय पर दोनो के साथ जुडते हटते रहते है। कांग्रेस पार्टी की कोई स्वयं की विचार धारा है नही किन्तु संघ परिवार से निकटतम राजनैतिक प्रतिद्वदिता के कारण कांग्रेस की मजबूरी है कि वह वामपंथियों के साथ ताल मेल बिठावे। अन्य सभी दल तो व्यक्तिगत गिरोह मात्र है जिनका किसी विचार धारा या कार्यक्रम से कोई संबंध नही । सामाजिक संस्थाऍ भी आपस मे बट गई । वामपंथियां ने सर्वोदय शीर्ष मे घुसकर उसे अपने साथ जोड लिया तो आर्य समाज को संघ परिवार ने अपने नजदीक कर लिया। गैर सरकारी संगठन आम तौर पर वामपंथी ग्रुप के साथ रहे। क्योकि एक तो वामपंथी सर्वाधिक चालाक माने जाते है। और दूसरा कारण यह भी है कि गैर सरकारी संगठनो का संबंध भारत के बाहर के देशो से है। जिसमे वामपंथी सहज मित्र बन जाते है और संघ परिवार के लोग नहीं जुड पाते। इस तरह हिन्दुओ की आवादी अस्सी प्रतिशत होते हुए भी संघ परिवार वामपंथ पर भारी नही पड सका।

भारत मे कोई भी जन आंदोलन तभी सफल हो सकता है जब उसे दोनो ध्रुवो का समर्थन मिले, उसका नेतृत्व किसी चरित्रवान सीधे सरल व्यक्ति के पास हो तथा उस व्यक्ति की कोई राजनैतिक महत्वाकांक्षा न हो। जब तक ये तीन बातें एक साथ नही जुडती तब तक कोई वैचारिक आंदोलन सफल नही होता । आवश्यक है कि
इन दो विपरीत ध्रुवो की टकराव क दीवार टूटे तभी तक आंदोलन सफल हो सकता है। । सन दो हजार आठ मे लोक सभा चुनाव के पूर्व कुछ सामाजिक संस्थाओ के लोगो ने आंदोलन की पृष्ठभुमि बनानी शरू की । एक का तानाबाना गोंविन्दाचार्य जी बुन रहे थे तो दूसरे का स्वामी अग्निवेष । दोनो के बीच कोइ एकता नही बन सकी। खूब प्रयत्न हुये लेकिन ऐसा कोई व्यक्ति नही मिला जिसके नेतृत्व मे दोनो एक हो पाते। चुनावों से करीब एक वर्ष पूर्व लम्बी कसरत के बाद दोनो गुटो की अलग अलग निर्णायक बैठके हुई। दोनो बैठको के समय मे केवल तीन दिनो का अंतर था। गोविन्दाचार्य जी के गुटो की बैठक वृन्दावन मे हुई। और अग्निवेष जी की गुट की जयपुर मे। दोनो ही जगह अप्रत्यक्ष रूप से राजनैतिक आंदोलन खडा करने की अप्रत्यक्ष कोशिश हुई। गोविन्द जी की पृथक सक्रियता को संघ परिवार घातक समझ रहा था और अग्निवेष जी की पृथक सक्रियता को कांग्रेस चुनावों मे घातक मान रही थी। परिणाम स्वरूप दोनो ही प्रयास असफल हुए।

इस असफलता के बाद भी न दोनो प्रमुख हार माने न ही दोनो भिन्न विचार धाराओ के लोग। दोनो के पास कोई सीधा साधा घोषित चरित्रवान व्यक्ति तो था नही जिसके नेतृत्व मे गुटबंदी टूट पाती । ऐसे ही समय मे धूमकेतु के समय रामदेव जी का उदय हुआ जिनके नेतृत्व मे दोनो गुटो की एकता की संभावना बनी। रामदेव जी की योजना जोर पकडने लगी। वामपंथी खेमे मे चिन्ता हुई । कांग्रेस खेमा ज्यादा चिन्तित हुआ। एकाएक राजीव दीक्षित की मृत्यु हुई और नये सेनापति की तलाश हुई। अरविन्द केजरीवाल निकट आये। बहुत कम समय मे ही अग्निवेष, अन्ना हजारे, किरण वेदी आदि रामदेव जी के संचालन मे आंदोलन की रूप रेखा बन जाती रही है। रामदेव जी भी आश्वस्थ थे तथा पूरा देश भी आश्वस्थ था। एकाएक अन्ना हजारे जी का उदय होता है । पांच अप्रेल को आंदोलन शुरू हुआ। तब तक यही लगा कि रामदेव जी और अन्ना जी मिलकर कर रहे है। किन्तु एक दिन मे ही रामदेव जी को किनारे करके वामपंथी गुट के लोग हावी हो गये और जब तक रामदेव जी के गुट को आभास होता तब तो वे पूरी तरह बाहर किये जा चुके थे।

यह आजतक भेद नही खुला कि यह सब योजना अनुसार हुआ या स्वाभाविक रूप से । अरविन्द केजरीवाल इतना बडा षडयंत्र कर सकते है ऐसा आभाष नही। स्वामी अग्निवेष कर सकते है किन्तु वे इस खेमे मे भी ज्यादा विश्वसनीय नहीं । अन्ना हजारे तो ऐसा जानते भी नही होगे। कांग्रेस पार्टी ने यदि किया तो बिना अरविन्द जी को शामिल किये संभव नही। किरण वेदी वगैरह भी ऐसा नही कर पाती। यह स्वाभाविक रूप से हुआ यह भी इसलिये नहीं जचता कि रामदेव जी को किनारे करने मे बहुत चालाकी हुई है । स्वामी अग्निवेष बिना किसी षडयंत्र के रामदेव के साथ जा ही नही सकते थे। धीरे धीरे भेद खुलेगा कि रामदेव जी को धोखा दिया गया या परिस्थिति वश वैसा हो गया। किन्तु अन्ना हजारे के आंदोलन मे संपूर्ण भारत के सब प्रकार के संगठन शामिल हो गये। वामपंथ और दक्षिण पंथ का भेद मिट गया। दोनो गुट एक हो गये। लगा कि कुछ क्रान्ति होगी।

एकाएक रामदेव जी को किनारे कर दिया गया। अवश्य ही इसमे कोई योजना होगी। जिसमे अरविन्द केजरीवाल भी शामिल होगें, अथवा अब उन्हे जोड लिया गया होगा। संघ परिवार प्रतीक्षा कर रहा था कि कांग्रेस पार्टी और सरकार से कोई टकराव होगा

किन्तु इसके ठीक विपरीत सरकार और उनका समर्थन गुट तथा आंदोलन के बीच दूरी कम होने लगी और यह भेद तब खुला जब पांच घोषित नामों मे न रामदेव जी गुट का कोई नाम शामिल किया गया न ही उनसे कोई राय की गई । सम्पूर्ण योजना मे कहीं भी अन्ना हजारेश्शामिल नही थे। किन्तु जब स्वाभाविक रूप से अन्ना ने अपने भाषण मे मोदी और नीतिश की तारीफ कर दी तब यह भेद एकाएक खुल गया क्योकि अग्निवेष गुट ने अन्ना हजारे को यह मानने को मजबूर कर दिया कि अब आपका काम समाप्त हो गया है। अब आप बिना इस गुट की राय के कुछ न बोले । मजबूरन अन्ना को मुँह बन्द करना पडा और पूरे भारत मे यह संदेश चला गया कि अन्ना का आंदोलन फिर से दो कांड होकर अग्निवेष गुट और गोविन्दाचार्य गुट के बीच विभाजित हो गया है जिसमें एक गुट के मुखौटा है अन्ना हजारे और दूसरे गुट के स्वामी रामदेव । फिर से दो वर्ष पुराने सैनिक अपने अपने मोर्चे पर डट गये। राकेश रफीक जी, मेधा पाटेकर, संदीप पांडे, अमरनाथ भाई आदि अन्ना जी का मोर्चा सम्हाल चुके है। उधर गोविन्दाचार्य जी गुरू मूर्ति जी आदि भी रामदव जी के मोर्चे पर डट गये है। अलग अलग योजनाएँ बन रही है । अलग अलग घोषणाएँ हो रही है। अग्निवेष गुट विजेता के रूप मे प्रसन्न चित्त दिख रहा है तो रामदेव गुट धोखा खाये के समन बदले की भावना मे दिख रहा है। पूरा देश स्तब्ध है। देश भर ने इस एकता से कुछ आशाएँ बनाई थी। दो ही दिनो मे इस एकता ने प्रमाणित कर दिया कि यह एकता राजनेताओं के लिये बहुत भारी पड सकती है। तत्काल ही योजनाएँ बनी होगी और एकता को पलीता लगातार फिर से दोनो गुटो को अलग अलग खेमे मे पहुँचा दिया गया।

जन शक्ति ने स्पष्ट कर दिया कि जनता पूरी तरह तैयार है। यदि कमी है तो नेतृत्व का अभाव या नेतृत्व की महत्वकांक्षाएँ । यदि पांच की कमेटी मे रामदेव जी और अन्ना जी दोनो शामिल हो जाते तो कुछ बिगड नही जाता। यदि दोनो ही बाहर रहते तब भी कुछ नही बिगडता । यदि कमेटी बनाते समय रामदेव जो को थोडा सम्मान दे दिया जाता तब भी कुछ नही बिगडता । यदि कमेटी बनाते समय रामदेव जी को थोडा सम्मान दे दिया जाता तब भी बात बन सकती थी। यदि कुछ नहीं भी हुआ तो नौ तारीख को लोकपाल बिल आंदोलन को कुछ दिनो के लिये रोककर वाराणसी, लखनउ से अलग आदोलन की घोषणा करनी ठीक नही था। लोकपाल बिल आंदोलन अलग से चलता रहता जो अन्ना जी के नेतृत्व मे वैसा ही होता जैसा रू पांच अप्रेल को था। बाकी आंदोलन उस तरह चलता जैसा रामदेव जी के नेतृत्वमे पूर्व स चल रहा था। रामदेव जी के आंदोलन का संचालन भी अरविन्द जी करते और अन्ना जी का भी। गोविन्दा चार्य जी और अग्निवेष जी की अलग अलग योजनाएँ न बनाकर मिल जुल कर बनती । मेरे विचार से गल्ती चाहे अन्जाने मे हुई या जान बूझकर लेकिन हुई तो है।

मै प्रारंभ से ही रामदेव जी के आंदोलन का समर्थक तथा अन्ना अरविन्द केजरीवाल के आंदोलन का सहयोगी हूँ। मेरे मन मे भी जन शक्ति के जागृति होने की खुशी थी । किन्तु एक ने सब गुड गोबर कर दिया। अन्ना जी के आंदोलन से निश्चित रूप से लाभ हुआ है। पहली बार लोकशक्ति के समक्ष राज्य शक्ति को झुकना पडा है। जे0 पी0 आंदोलन से भी ज्यादा बडी उपलब्धि है यह आंदोलन । इस आंदोलन का दो फाड होना दूखद है। अन्ना गुट द्वारा अलग आंदोलन करना पूरी तरह गलत था रामदेव जी द्वारा भी इस तरह के तरल ठोकना गलत है वैसे भी रामदेव जी के आंदोलन की अपेक्षा अन्ना गुट के मुछे ज्यादा प्रभावी थे। रामदेव जी के मुछे उतने प्रभावी नही। फिर भी उन्होने चार जून को निर्णायक संघर्ष की घोषणा कर दी है । स्थिति दुखद है। किन्तु हम क्या कर सकते है । दोनो ही ठीक ही ठीक नीयत से है तो मजबूरी है वैसे कुल मिलाकर अन्ना जी ने बहुत सुझ बूझ का परिचय दिया है। उन्होन वाराणसी लखनउ की रैली के समय बीमार पडकर अच्छा किया। यदि ये इस आंदोलन को आगे जारी रखते तो उससे हानी ही होती लाभ नही। अन्ना जी का आंदोलन तो पंद्रह अगस्त के बाद ही सोचना चाहिये। रामदेव जी भी अपने आंदोलन को मेल मिलाप की दिशा दे सके तो अच्छा होगा। वैसे अग्निवेष जी दोनो आंदोलनों की दूर कम होने देगे ऐसा नही लगता।

फिर भी कुछ न कुछ हो रहा है यह संतोष की बात है । आगे भी विचार मंथन चलता ही रहेगा। हम आपका कर्तब्य है कि सर्तक रहे। ध्यान रखे कि सत्ता से टकराव न होकर राजनैतिक व्यवस्था से टकराव हो । ध्यान रखे किटकराव एजेन्सियॉ आपस मे ही न टकरा जावे। हमस ब ऐसे सभी प्रयत्नो को मजबूत करने की कोशिश करेंगें तो मार्ग निकल जायगा।

बुद्धदेव भट्टाचार्य का वामपंथ और मेरी चार वर्ष पूर्व की भविष्यवाणी

आज से ठीक चार वर्ष पूर्व ज्ञानतत्व एक सौ अठाइस मार्च एक से पंद्रह दो हजार सात मे भारत के गोर्वाचोव बुद्धदेव भटटाचार्य शीर्षक से मैने एक लेख लिखा था जो इस प्रकार था।

''दुनिया के शक्ति संतुलन मे पूॅजीवाद और साम्यवाद के बीच लम्बी प्रति स्पर्धा चली। पूॅजीवाद का नेतृत्व अमेरिका के पास था और साम्यवाद का रूस के पास। अमेरिका व्यावसायिक बुद्धि के आधार पर दुनिया भर के देशों का शोषण करता था और अपने देश के नागरिकों को सुख सुविधा सम्पन्न बनाये रखता था जबकि रूस सैनिक बुद्धि के अन्तर्गत अपने देश के लोगों का पेट काट काटकर भी दूसरे देशा की सहायता में लगा रहता था। अमेरिका ने धन के बल पर बुद्धि खरीदी किन्तु रूस इस मामलें में पूरी प्रतिस्पर्धा करने के बाद भी पिछड़ा रहा। ऐसे ही समय में एक ऐतिहासिक घटना क्रम के अन्तर्गत रूस के राष्ट्रपति पद पर गोर्वाचोव बैठे। उन्होंने सम्पूर्ण स्थिति की विस्तृत समोक्षा की और पाया कि अमेरिका के साथ सैनिक प्रतिस्पर्धा न ही किसी प्रकार भी न्यायसंगत है न ही तर्क पूर्ण। सैनिक शक्ति के बल पर बनी लौह दीवारें लम्बे समय तक एकता बनाकर नहीं रख सकतीं न ही ऐसा बनाये रखना किसी भी रूप में मानवीय ही है। उन्होंने सैनिक शक्ति के बल पर बनी लौह दीवारों को तुड़वा दिया और दीवारों के टूटते ही उसके अन्दर के साम्यवादी देश एक एक करके दीवार की सीमा से बाहर कूद गये। रूस और चीन ने भी सैनिक प्रतिस्पर्धा के स्थान पर व्यावसायिक प्रतिस्पर्धा का मार्ग पकड़ा। आज यह सिद्ध हो चुका है कि गोर्बाचोव क इस परिवर्तन के कारण ही अमेरिका पूरी दुनियॉ का एक छत्र मार्ग दर्शक बनने में सफल हुआ किन्तु रूस और चीन के आम नागरिक आज पहले की अपेक्षा बहुत अधिक

स्वतंत्र और सुख सम्पन्नता का अनुभव करते हैं। गोर्बाचोव का यह परिवर्तन साम्यवादी इतिहास में एक काले अध्याय के रूप म भले ही लिखा जायगा किन्तु सम्पूर्ण विश्व के मानवीय इतिहास में उनका नाम स्वर्णाच्छरों से अंकित होगा।

दुनिया भर के साम्यवादी देशों ने साम्यवाद की विफलता स्वीकार कर ली किन्तु दुनिया भर के साम्यवादियों ने पूरी तरह हार नहीं मानी। वे प्रजातांत्रिक तरीके से अभियान चलाते रहे। उन्होंने मुसलमानों की बन्दूक मुसलमानों के ही कन्धें पर रखकर अमेरिका के विरूद्ध चलानी शुरू कर दी और एक ऐसा समीकरण बनाया कि अमेरिका के विरूद्ध वातावरण बनाने में साम्यवादियों को काफी सफलता मिली भले ही मुसलमानों का चाहे जीतना भी नुकसान हुआ हो। साम्यवाद के पास तो खोने को कुछ था भी नहीं इसीलिये अमेरिका के विरूद्ध आग उगलने से उन्हें कोई नुकसान न हो सकता था न हुआ।

भारत के साम्यवादी अपनी इस कूटनीति में बढ़ चढ़ कर आगे रहे। किन्तु उन्हें यह अच्छी तरह पता था कि अमेरिका विरोध के नाम पर भारत में राजनैतिक छलांग लगाना संभव नहीं हैं। अतः साम्यवादियों ने कांग्रेस की बन्दूक श्रमजीवियों के कन्धे पर रखकर ऐसा कूटनीतिक आक्रमण किया कि अटल बिहारी बाजपेयी की मजबूत किलेबंदी भी ध्वस्त हो गई। एकाएक अप्रत्याशित रूप से कांग्रेस सत्ता में आई और साम्यवादियों को अमर बेल के समान कांग्रेस के उपर छा जाने का अवसर मिल ही गया। कांग्रेस ने शुरू से ही महसूस किया कि वामपंथी अर्थनीति जन आक्रोश में तो पूरी तरह उपयोगी हो सकती है किन्तु इससे न देश को समृद्ध बनाया जा सकता है न समाज को। देश और समाज को समृद्ध बनाये रखन के लिये तो आर्थिक प्रतिस्पर्धा को खुला प्रोत्साहन देना ही होगा। यह बात सब जानते भी हैं और मानते भी है कि साम्यवादी अर्थनीति में राष्ट्र भी आर्थिक दृष्टि से पिछड़ता है और समाज भी किन्तु आर्थिक विषमता बहुत तेजी से बढ़ती है अर्थात् पूँजीवादी अर्थव्यवस्था में साम्यवादी अर्थव्यवस्था की अपेक्षा अमीर हवाई जहाज की गति से आगे बढ़ता है और गरीब चींटी की चाल से। ऐसी स्थिति में कांग्रेस ने अपनी पूँजीवादी अर्थव्यवस्था को इस प्रकार जारी रखा कि थोड़ी कम रफ्तार से वे चलते भी रहें और साम्यवादी विरोध कम करके उसका लाभ भी उठाते रहे। सेज की योजना एक ऐसा ही कदम था जो भारत की आर्थिक स्थिति में तेज छलांग लगा सकती हैं इतनी तेज की दुनिया के अन्य पूँजीवादी देश भी परेशान हो जावें। इस योजना से गरीब से गरीब का भी जीवन स्तर सुधरेगा यह बिल्कुल निश्चित है किन्तु इस योजना के लाभ का अधिकांश हिस्सा तो हांथियो को ही जायेगा, चीटियॉ तो सिर्फ दाने तक ही रह जायेगी।

बुद्धदेव जी की स्थिति अन्य साम्यवादियों से भिन्न थी।बंगाल कोई पृथक देश नहीं था कि उसे लौह कवच में रखा जा सके। राजनैतिक रूप से तो बंगाल को लाह दीवार सरीखा सुरक्षित कर दिया गया किन्तु आर्थिक रूप से तो हवा में लाठी नहीं चल सकती। यदि भारत के अन्य प्रदेश उद्योग लगा लगाकर अपने अपने क्षेत्रों का आर्थिक विकास तेजी से कर लें तो बंगाल टापू के समान कब तक सुरक्षित रह सकेगा । परिणाम स्वरूप बुद्धदेव जी ने परिस्थितियों का ठीक से आकलन करके यथार्थवादी दृष्टिकोण अपनाना ठीक समझा और गोर्बाचोव की राह पकड़ी जो न्याय संगत भी है और तर्क संगत भी किन्तु साम्यवाद की संभावनाओं को भारत में सदा सदा के लिये समाप्त कर सकती हैं। साम्यवादी रणनीति का पहला पाठ ही यह है कि सत्ता प्राप्ति के लिये वर्ग निर्माण वर्ग विद्वेष, वर्ग संघर्ष अनिवार्य है जबकि समस्याओं का समाधान वर्ग संघर्ष में बाधक है। बुद्धदेव जी की मजबूरी थी कि वे समस्याओं के समाधान में अलग थलग न पड़ जावें।

भारत के मार्क्सवादियों ने तो किसी तरह छाती पर पत्थर रखकर बुद्धदेव जी का समर्थन कर दिया और रही सही कसर चीन के राष्ट्रपति ने अपनी भारत यात्रा में पूरी कर दी किन्तु भारत के अन्य वामपंथी अपनी मौत खुद बुलाने को तैयार नहीं हुए। वे

भीतर ही भीतर कसमसा रहे थे कि चालाक ममता बनर्जी मौके का फायदा उठाकर मैदान मे अकेले और बिना योजना के कूद पड़ी। मेधा पाटकर जैसे प्रच्छन्न वामपंथियों ने भी तत्काल ममता का साथ दिया। भारतीय जनता पार्टी को भी ममता के समर्थन में लाभ दिखा भले ही उसकी कितनी भी जग हंसाई क्यों न हुई हो। राजनीति का ऐसा चरित्र पतन शायद दुनियॉ में देखन को न मिले कि अपने अपने राज्यों में सेज लागू करने के लिये आगे आगे दौड़ लगाने वाली भाजपा भी बंगाल में सेज के विरूद्ध मोर्चे पर आ गई। नक्सलवादियों ने तो खुलकर ही मोर्चा सम्हाला। धीरे धीरे अन्य वामपंथी भी प्रश्न खड़े करने लगे। एक माह पहले ही बुद्धदेव जो की भरपूर प्रशंसा करने वाले मनमोहन जी ने भी चुप रहना ही बेहतर समझा। मार्क्सवादी कार्यकर्ता भी बुद्धदेव जी का समर्थन करने में हिचकिचाने लगा। बुद्धदेव जी स्वयं को अकेला महसूस करने लगे और धीरे धीरे बढ़ते कदम रोकने में ही भलाई समझी। आज बुद्धदेव जी की हालत यह हो गई है कि नन्दीग्राम संघर्ष में मरने वाले अधिकांश लोग मार्क्सवादी भी हो सकते हैं क्योंकि अब तक यह प्रमाणित नही हुआ कि किस गुट के लोग मरे लेकिन सारी दूनियॉ में यह प्रचारित हो गया है कि मार्क्सवादीयो ने दूसरे गुट की हत्याएँ की है और जीवन भर असत्य को सत्य प्रमाणित करने में सिद्धहस्त मार्क्सवादी आज सत्य को भी सत्य प्रमाणित नही कर पा रहे।

बुद्धदेव जी ने गोर्बाचोव के कार्यों से सबक नही सीखा। गोर्बाचोव के एक काया पलट से सारी दूनियॉ की राजनीति बदल गई, रूस और चीन का भी कायापलट हो गया किन्तु गार्बाचोव को रूस की जनता की प्रशंसा नही मिली। आज भी उन्हे साम्यवाद का विभीषण ही माना जाता है। इसी तरह बूद्धदेव जी ने भारतीय मार्क्सवाद को दूनियॉ की राह चलने का संदेश देकर उसे भारत से विदा करने का रास्ता खोल दिया है। यह कदम उठाने के पुर्व वे यह भूल गये कि भारतीय राजनीति में न्याय और तर्क का दूर दूर तक कोई स्थान नही है। यदि आप कमजोर होंगे तो आपके अपने लोग भी आप पर चील कौवे के समान टूट पड़ने में जरा भी हिचकेंगे नही। अच्छा होगा कि बुद्धदेव जी यथार्थ को समझें अर्थात् यदि वे बंगाल की जनता का आर्थिक विकास करने का दृढ़ निश्चय ही कर लिये हो तो अपने राजनैतिक बलिदान की पूर्व तैयारी करके ही इस दिशा में आगे बढ़े और मेरी तो यही सलाह है कि जनहित में सत्ता सुख पर खतरा उठाने की हिम्मत उन्हे करनी चाहिये''।

लेख मे मैने स्पष्ट लिखा था कि भारत से परंपरागत साम्यवाद के पतन का रास्ता बुद्धदेव जी ने खोल दिया है। यदि साम्यवाद ने अपने पुराने स्वरूप में संशोधन नही किया तो साम्यवाद डूब जायगा और साम्यवाद से भारत को मुक्त करने का श्रेय बुद्धदेव जी को मिलेगा। साथ ही साम्यवाद के पतन का कलंक भी उन्ही के खाते मे जायगा क्योकि प्रकाश करात सरीखे लोग साम्यवाद के परंपरागत स्वरूप मे परिवर्तन होने नही देंगें और बुद्धदेव जी के मुख्य मंत्रित्व मे ही इसकी शव यात्रा निकलेगी।

मैने जब यह लिखा था उस समय ऐसी भविष्यवाणी करने वाला सम्पूर्ण भारत मे मै अकेला ही था। मैं तो यहॉ तक मानता हूँ कि इतनी स्पष्ट भविष्यवाणी तो पूरे विश्व मे किसी ने नही की थी। मैने तो बाद मे यहॉ तक लिखा था कि भारतीय जनता मे प्रधानमंत्री बनने तक की योग्यता रखने वालों मे ग्यारह व्यक्ति है जो मनमोहन सिंह, सोनियॉ गांधी, चिदम्बरम, नीतिश कुमार, नरेन्द्र मोदी , रमणसिंह , शिवराज पाटील, बुद्धदेव भट्टाचार्य , अच्युतानन्दन , बाबूलाल मरांडी, शान्ता कुमार है। मैने यह भी लिखा था कि ग्यारह ऐसे भी व्यक्ति है जिनकी छाया से भी राजनीति को दूर रखना चाहिये क्योकि ये खतरनाक व्यक्ति है जो लालू यादव, रामबिलास पासवान, मुलायम सिंह, मायावती , शिबु सोरेन, अजीत जोगी, ममता बनर्जी , जयललिता, करूणानिधि, प्रकाश करात, और अमर सिंह है। वैसे अब तो दिग्विजय सिंह भी उसी श्रेणी की ओर बढ रहे है। इन दोनो श्रेणियो मे आसमान जमीन का फर्क है। यह सूची मै कई वर्ष पूर्व से बराबर लिखता रहा हूँ। जिस समय संपूर्ण भारत मे मनमोहन सिंह के खिलाफ भ्रष्टाचार के नाम पर एक नकली तूफान खडा किया गया था और उस तूफान मे सोनियॉ तक ने मनमोहन सिंह का साथ छोड दिया था तब भी मै चट्टान की तरह मनमोहन सिंह के साथ खडा रहा । आज चार वर्ष बाद मै यह कह सकता हूँ कि बंगाल मे साम्यवाद के साथ जो कुछ हुआ उसमें कुछ भी नया नहीं था। आश्चर्य तो यह हुआ कि इतना होते हुए भी कुछ सीटे साम्यवादी लेने मे सफल रहे। क्योकि यह संभव ही नहीं था कि ममता बनर्जी सरीखें चालाक कूटनीतिज्ञ से टकराव हो रहा हा और बुद्धदेव जी के पैरों मे प्रकाश करात एक भारी पत्थर के रूप मे बंधा हो तो बताइये बेचारे बुद्धदेव कहॉ टिक सकते थे। मनमोहन सिंह जी ने तो धीरे धीरे अपना

पत्थर फेका अन्यथा ये करात जी तो पहले उन्ही के पैरों मे बंधे हुये थे। बुद्धदेव जी को सबक सीखना चाहिये था कि किस तरह नरेन्द्र मोदी ने अशोक सिंघल, प्रवीण तोगडिया से पिण्ड छुडाया और किस तरह बेचारे नीतिश कुमार ने शरद यादव जार्ज फर्नान्डीस से । यदि ये सब लोग इन पत्थरो का मोह नही छोडते तो इनकी भी नियति बुद्धदेव जी के ही समान होनी थी । दुर्गति तो बेचारे अच्युतानन्दन की भी वैसी ही होती किन्तु उन्होने तो करात रूपी पत्थर पहले ही फेक कर अपनी इज्जत बचाली । बुद्धदेव जी पत्थर फेकने का प्रयास ही करते रह गयें किन्तु फेक नही पायें। जिस समय प्रकाश करात ने सोमनाथ जी पर भरपूर आक्रमण किया था उसी समय बुद्धदेव जी को स्पष्ट लाइन लेनी चाहिये थी । यदि उसी समय मुख्य मंत्री पद चला जाता तब भी कोई बात नही थी। उस स्थिति मे टकराव सीधा न होकर तीन के बीच होता। (1) ममता बनर्जी (2) परंपरावादी कम्युनिस्ट (3) संशोधन वादी कम्युनिस्ट + कांग्रेस । मुझे बिल्कुल पक्का विश्वास है कि बंगाल की जनता ममता या करात को पसंद न करके बुद्धदेव कांग्रेस गठबंधन को पसंद करती अथवा कल्पना करिये कि परिणाम ऐसे ही होते तब भी बुद्धदेव कांग्रेस गठजोड एक विकल्प बना रहता। अब तो वैसी भी स्थिति शेष नही है क्योकि परंपरागत साम्यवाद का भविष्य सदा सदा के लिये समाप्त हो चुका है। इस सीमा तक समाप्त हो चुका है कि अब तो समाजवाद पर भी तलवार लटकने लगी है। ऐसी हालत मे बुद्धदेव जी को इस परंपरा गत साम्यवाद का मुर्दा कब्र मे पहुँचाकर उदार साम्यवाद की राह घोषित कर देनी चाहिये।

मै स्पष्ट हूँ कि बंगाल के लोगों ने परंपरागत साम्यवाद से पिण्ड छुडाया है न कि ममता को चुना है। मेरी नजर मे तो ममता बनर्जी शुरू से ही लालू, मुलायम, जोगी, करात सरीखें खतरनाकों की गिनती मे है किन्तु जनता के पास विकल्प नही था। पिछले दो तीन वर्षो से भारत मे पहली बार इमानदारी और चरित्र का राजनीति मे महत्व बढा है । तिकडम बाज कुटनीतिज्ञो के एक एक किले ढह रहे है । बुद्धदेव जी भट्टाचार्य इमानदारी और चरित्र के प्रतीक रहे है । इसके बाद भी ऐसी दुर्गति से उन्हे सीख लेना चाहिये । वे या तो साम्यवाद को समय के साथ बदले या स्वयं एक नया साम्यवादी संस्करण सोमनाथ जी के साथ मिलकर तैयार करे। ममता ज्यादा दिन टिक नही पायेगी । ज्योही बंगाल की जनता को विकल्प दिखेगा, वह कूद पडेगी । पहले बुद्धदेव जी विकल्प तो बने और उससे भी पहले आवश्यक है कि वे करात के परंपरागत साम्यवादी पत्थरो से अपने पैरो को मुक्त कर ले अन्यथा कहीं ऐसा न हो कि बंगाल मे कांग्रेस के साथ जुडकर कोई नया विकल्प तैयार हो जावे और बेचारे बुद्धदेव जी गोर्वाचार्य को समान इतिहास पुरूष बन जावे।

आचार्य नरेन्द्र देव और डा0 लोहिया, एक समीक्षा

डा. वृज कुमार पाण्डेय ने ''विवेक शक्ति'' मे आचार्य नरेन्द्र देव संबंधी एक लेख लिखा जिसका संक्षिप्त यह है कि आचार्य नरेन्द्र देव की राय में ऐतिहासिक विकास मे अनेक कारण काम करते है। उनका यह मानना है कि नई सामाजिक व्यवस्था को कायम करने के लिये अनुकूल सामाजिक परिस्थिति और प्रगति के साथ साथ मनुष्यो का सचेष्ट प्रयत्न भी जरूरी होता है। वे लेनिन की इस बात को महत्वपूर्ण मानते है कि क्रान्ति के लिये क्रान्तिकारी परिस्थिति और क्रान्तिकारी प्रयत्न दोनो आवश्यक है। उनकी धारणा थी कि क्रान्ति स्वतः सफल नही होती । संगठन सुदृढ होने से ही और क्रान्ति के संचालको की दृष्टि स्पष्ट तथा रचनात्मक होने से ही क्रान्ति सफल होती है। वे स्वीकार करते थे कि पुरानी आर्थिक प्रणाली को नाश करके उसके स्थान पर एक नई आर्थिक प्रणाली कायम करना एक ऐसी घटना है जो कि मामूली सुधारवाद के रास्ते से नही हो सकती । समाज के ढाचे मे आधारभूत परवर्तन की ऐतिहासिक आवश्यकता क्रान्ति द्वारा ही पूर्ण हो सकती है। पर वे सुधार को क्रान्ति का आवश्यक अंग समझते थे। साथ ही नये समाजवादी समाज के निर्माण के लिये संघर्ष के साथ साथ क्रान्तिकारी रचनात्मक कार्यो को भी जरूरी मानते थे। आचार्य नरेन्द्र देव के विचारों में सुधार और रचनात्मक कार्यो के प्रति यह सुझाव गांधीवाद अथवा भारतीय समाज की मौजूदा परिस्थितियों के कारण है–ऐसा अनुमान किया जा सकता है । उनके विचारों में भारतीय समाज और परिस्थितियों की भूमिका से इंकार नही किया जा सकता ।

वे मार्क्सवाद के गहरे अध्येता थे और उन्होने मार्क्स के विचारो को बडी गहराई से देखा – परखा था। वे मार्क्स के वर्गीय विश्लेषण को मूलतः स्वीकार करते थे और वर्गविहीन समाज को कायम करने के लिये वर्ग संघर्ष को अनिवार्य मानते थे। लेकिन वे वर्ग सहयोग के अस्तित्व को भी स्वीकार करते थे और मानते थे कि ' विभिन्न वर्गो के हितो में संघर्ष होते हुए भी समाज के अस्तित्व के लिये किसी हद तक वर्ग सहयोग अनिवार्य है। इसके बिना तो समाज छिन्न भिन्न हो जायगा'। क्या उनके इस परस्पर विरोधी दिखते द्वन्द के पीछे भी भारतीय समाज के सरोकारो की भूमिका है? लेकिन बिना किसी वैचारिक अंतर्विरोध के वे वर्ग संघर्ष को वर्ग समाज का अनिवार्य घटनाक्रम मानते थे। उनका कहना था कि वर्ग संगठन और वर्ग संघर्ष द्वारा ही शोषित वर्ग शोषण और आधिपत्य से छुटकारा पा सकता है और ऐसे समाज का निर्माण कर सकता है जिसमे वह शान्ति और समृद्धि का जोवन बिता सके । इस तरह शोषितों का वर्ग संघर्ष सामाजिक क्रान्ति का मुख्य उपकरण तथा समाजवादी वर्ग विहीन समाज की स्थापना का आवश्यक साधन है।?

शोषित के वर्ग संघर्ष का समर्थन करते हुए आचार्य नरेन्द्रदेव कहते थे– 'वर्ग –संघर्ष ही सामाजिक क्रान्ति का आधार रहा है। समाजवादी लोग वर्ग –संघर्ष को पैदा नही करते और न वे उसे पसंद ही करते है। उनका उद्देश्य तो ..... समाज का ऐसा संगठन करना था जिसमे परस्पर विरोधी वर्गो और उनमे निरंतर चलने वाले संघर्षो का अंत हो जाय'' लेकिन मूल बात यह है बिना वर्ग संघर्ष के शोषण और श्शोषक वर्ग के के आधिपत्य से छुटकारा मिलना संभव नही है और वर्ग संघर्ष के द्वारा ही समाज का विकास हुआ है इसलिये समाजवादियों को वर्ग संघर्ष के लिये शोषित वर्गो को सचेत एवं संगठित करना पडता है और उनमें ऐसी चेतना पैदा करनी होती ह कि शोषित वर्गो की लडाई आर्थिक न रहकर राजनीतिक बन जाये।इस तरह हम देखते है कि आचार्य नरेन्द्र देव जी मार्क्स की इस बात को तसलीम करते थे कि वर्ग संघर्ष आर्थिक और राजनीतिक दोनो ही है। वे यह भी

तसलीम करते थे कि पूंजीवादी युग मे कल कारखानों का मजदूर ही मुख्य क्रान्तिकारी वर्ग है । समाजवादी क्रान्ति का वही अग्रणी है। उसका संगठन तथा उसकी चेतना और क्षमता समाजवादी क्रान्ति का मूल आधार है। लेनिन की तरह वे इस बात पर भी जोर देते थे कि केवल मजदूरों के बलबूते पर समाजवादी क्रान्ति संभव नहीं, उसके लिये तो मध्यम श्रेणी के शिक्षितों को क्रान्तिकारी समाजवादी नेतृत्व देना भी आवश्यक है । आचार्य नरेन्द्रदेव का कहना था कि मार्क्सवादियों के अनुसार क्रान्तिकारी आंदोलन नही हो सकता और समाजवाद के दर्शन की सृष्टि तथा उसका विकास विद्वानो और चिन्तको द्वारा ही होता है । आने वाले समाज की भविष्यवाणी उनके द्वारा ही होती है। इस तरह निम्न मध्यवर्गीय विचारक ही समाजवादी क्रान्ति के आध्यात्मिक साधन है।

विवेक शक्ति मे ही त्रिभुवन नाथ जी का लेख छपा है जिसमे उनकी जीवनी के साथ साथ यह भी लिखा है कि आचार्य नरेन्द्र देव निश्चित रूप से मार्क्सवादी थे। उनका वर्ग संघर्ष मे विश्वास था, वर्ग समन्वय मे नहीं। इसी तरह वर्ष उन्नीस सौ बयालीस मे कांग्रेस के अंदर रहने न रहने पर विचार मंथन हुआ तो आचार्य नरेन्द्रदेव जी ने स्पष्ट विचार रखा कि वामपंथी तत्वो को कांग्रेस मे बने रहना चाहिये क्योकि कांग्रेस मंच पर तरह तरह के लोग है। कांग्रेस विचार धारा को वामपंथी दिशा देने के लिये उसमें रहना आवश्यक है। किन्तु उन्नीस सौ अडतालीस मे कांग्रेस पार्टी ने प्रस्ताव पारित कर दिया कि कांग्रेस के भीतर कोई अन्य दल अलग नाम से नहीं रह सकता तब आचार्य जी के नेतृत्व में वामपंथियों ने अलग दल बना लिया और वहॉ भी डाक्टर राममोहन लोहिया से विरोध हुआ तब नया दल सोशलिस्ट और प्रजा सोशलिस्ट मे दो फाड हो गया।

इस संबंध मे आचार्य पंकज जी ने बताया कि आचार्य नरेन्द्र देव पूरी तरह मार्क्सवादी थे और डाक्टर लोहिया उनके ठीक विपरीत । नरेन्द्रदेव जो ने जेल मे जवाहर लाल नेंहरू को मार्क्सवाद समझाया। आचार्य जी ने ही नेहरू जी को बौद्ध दर्शन भी समझाया ।भारतीय शासन व्यवस्था मे अशोक चक्र या पंचशील आदि का प्रवेश आचार्य नरेन्द्र देव की ही नेहरू जी पर छाप के साथ जुडी रही है। नेहरू जी पर उनका इतना प्रभाव था कि जब फैजाबाद के चुनाव मे आचार्य नरेन्द्रदेव के खिलाफ बाबा राघवदास कांग्रेंस क उम्मीदवार थे तो नेहरू जी तटस्थ हो गये।

मुझे आचार्य नरेन्द्र देव जी के विषय मे पहले कुछ जानकारी नही थी। मै तो उन्हे एक समाजवादी मात्र मानता था जो लोहिया जी के समान सघर्ष शील न होकर गंभीर विचारक मात्र थे । विवेक शक्ति पढने और पंकज जी से चर्चा के बाद पता चला कि आचार्य जी एक सामाजिक विचारक कम और मार्क्सवादी विचारक अधिक थे। भारत मे आज जो वर्ग संघर्ष का बीज बोया हुआ है और जिसके विषफल हमे आज तक घायल कर रह है वह नेहरू जी की अपनी धारणा न होकर आचार्य नरेन्द्रदेव का बोया हुआ बीज था। इस लेख को पढकर मेरी यह धारणा तो मजबूत हुई है कि साम्यवादी भारतीय राजनीति में सर्वाधिक चालाक और संगठित जीव होता है । वह योजना पूर्वक अन्य संगठनो मे प्रवेश करके उसे नपथ्य से संचालित करने लगता है । आचार्य नरेन्द्रदेव की छवि मेरे विचारों मे बहुत बदल गई है । आचार्य नरेन्द्र देव जी ने रूस जाकर साम्यवाद समझा यह भी मै नही जानता था। ऐसे ऐसे लोगों ने मिलकर विदेशी व्यवस्थाओं को भारत पर इस तरह थोपा कि आज तक हिन्दुत्व भी कराह रहा है और भारतीय समाज व्यवस्था भी। भारत या तो अमेरिकी एजेन्टो के प्रभाव मे आ गया अथवा रूसी एजेन्टो के प्रभाव मे। इन दोनो के एजेन्टो ने भारत के अपने वास्तविक स्वरूप को किनारे कर दिया। अब जरूरत यह है कि इन पश्चिमी दक्षिण पंथी एजेंटो तथा पूर्वी वामपंथी एजेंटो को किनारे करके भारतीय समाज व्यवस्था उत्तर पंथ की राह पर चलना शुरू कर दे ।इन लेखो को पढने के बाद मेरी इस धारणा को भी आधार मिल गया है कि साम्यवाद समाजवाद किसी भी रूप मे श्रम की समस्या का समाधान न होकर बुद्धिजीवियों की समस्याओ का समाधान है। स्पष्ट है कि मेरे विचार मे साम्यवाद समाज वाद ने बुद्धि और श्रम के बीच बुद्धि का पक्ष लिया और चालाकी से श्रम शोषण के मार्ग प्रशस्त किये। साम्यवादी समाज वादियों का न श्रम से कोई संबंध था न पूंजी से । वे तो श्रम को ढाल बनाकर सत्ता के लिये उसका उपयोग करना चाहते थे जो उन्होने किया भी और कर भी रहे है। स्वाभाविक है कि कोई ढाल को हटने नही देना चाहता। लोहिया जयप्रकाश आदि को इसका अपवाद माना जा सकता है।

वर्ग संघर्ष की वकालत करने वाले ऐसे एजेन्टो से मै जानना चाहता हूँ कि वर्ग शरीफ और बदमाश व्यक्तियो के बीच बनना चाहिये अथवा गरीब अमीर के बीच? वर्ग समस्याओ के समाधान के लिये होगा या सत्ता प्राप्ति के लिये । वर्ग का आधार प्रवृत्ति होगी या जाति धर्म क्षेत्रियता आर्थिक स्थिति । जो लोग प्रवृत्ति के आधार पर वर्ग निमार्ण के पक्ष मे है उन सबका स्वागत है। जा वर्ग निमार्ण वर्ग संघर्ष का आधार प्रवृत्ति के अतिरिक्त और कुछ मानते है अथवा जो लोग समाधान की अपेक्षा सत्ता के लिये वर्ग संघर्ष को आवश्यक मानते है । वे समाज के शत्रु माने जाने चाहिये ऐसा मेरा मानना है।

शशि कुमार झा जनसत्ता सात मई से

यह अच्छी बात है कि पिछले कुछ समय से देश में भ्रष्टाचार पर लगातार बहस हो रही है । श्शायद ही इसके पहले कभी इस मुद्दे पर इतनी चर्चा हुई हो। भ्रष्टाचार जितने चरम रूप मे आज दिखाई देता है, पहले नही था। मौजुदा बहस से यह जाहिर होता है कि हमने भ्रष्टाचार को नियति नही मान लिया है और इस दौर से बाहर निकलने के लिये बेचैन है। लेकिन बहुत कुछ इस पर निर्भर करता है कि हम इस समस्या को किस नजरिये से देखते है?

ऐसे लोगों की कमी नही है जो भ्रष्टाचार को बस एक नैतिक समस्या के रूप मे देखते हैं यानी इसे व्यक्तियों की बुराई मानते है। जाहिर है वे व्यक्तियो के मानस मे बदलाव या चरित्र सुधार के कार्यक्रम के जरिये भ्रष्टाचार से निपटने का परामर्श देते है। लेकिन जहॉ भ्रष्टाचार सर्वभक्षी और संस्थागत रूप ले चुका हो, वहॉ सदाचार की सीख देना समस्या की असलियत से मुंह मोडना है। एक सवाल यह भी उठता है कि सर्वव्यापी भ्रष्टाचार वाली व्यवस्था मे नैतिकता को किस तरह से आंका जाय? क्या व्यवस्था चलाने वालों के भ्रष्टाचार और व्यवस्था से पीडित लोगों की छोटी–मोटी अनैतिकताओं को एक ही पलडे पर रखा जाना उचित होगा? यही से निजी बनाम सार्वजनिक नैतिकता का प्रश्न भी खडा होता है।

सीधे तौर पर पूछे तो राजनीतिक और प्रशासनिक पदो पर बैठे लोगों के शासन मे आने के प्रतिस्पर्धी संघर्ष से लेकर शासन करने की जिम्मेदारी निभाने तक की प्रक्रिया आधुनिक गणतांत्रिक राज्यो मे कितनी सरल और कितनो जटिल है, क्या यह प्रश्न भ्रष्टाचार जैसी समस्या पर बहस करने के लिये प्रासंगिक हो सकता है? दूसरे सार्वजनिक पदो पर आसीन लोगों के भ्रष्टाचार का संबंध किस हद तक संबंधित व्यक्ति के निजी और स्वायत्त निर्णय आचरण जीवन उद्देश्य या पसंदगी नापसंदगी पर निर्भर करता है?

क्या सार्वजनिक जीवन को अपनाने का निर्णय एक कठोर निर्णय है जिसमे व्यक्ति को संस्थात्मक और प्रक्रियात्मक बाध्यताओ के अनुरूप ऐसे फैसले भी लेने पडते है जिनमे अनिवार्य रूप से किसी न किसी के साथ ज्यादती या अन्याय अवश्यंभावी और स्वाभाविक है। क्या निजी जीवन की नैतिकता और सार्वजनिक जीवन की नैतिकता के लिये अलग अलग मापदण्ड होते है या होने चाहिये? क्या सीमित अर्थो मे ही सही, बहुमत आधारित लोकतांत्रिक राजनीति मे सत्ता हासिल करने की प्रतिस्पर्धा के लिये प्रयुक्त होने वाली युद्ध या हार जीत जैसी आक्रामक उपमांए लोकतांत्रिक उद्देश्यो के बजाय सामंती और प्रतिक्रियावादी उन्माद और लोभ से ज्यादा उत्प्रेरित नही लगती?

एक जटिल बहुलतावादी समाज मे प्रतिनिधिमूलक संसदीय प्रणाली के अंतर्गत सत्ता हासिल करने मे सुचिता और सदाचार की कितनी जगह पहले थी या आज रह गई है ? क्या कथित तौर पर लोकतांत्रिक समाजो मे राज्य सत्ता की प्रकृति पूरी तरह से लोकतांत्रिक आदर्शो के अनुरूप ढल पाई है या यह अभी तक प्राधिकार को वैधानिकता हासिल कराने के लिये कुछ चुनावी प्रक्रियाओं के समय समय पर बेमन से किये जाने वाले अनुपालन के चक्र मे फस गई है, जिसमे एक पक्ष द्वारा दूसरे पक्ष को पछाडने के लिये उचित अनुचित हथकंडे अपनाए जाते है। यह एक ऐसी स्थिति है, जिसमे तमाम पक्ष स्वयं को इसी व्यवस्था इसकी प्रक्रियात्मक बाध्यताओं और अन्य पक्षो के अनुचित रवैयो से पीडित होने के रूप मे पेश करते है। और इसी आधार पर अपने भ्रष्ट साधनो का भी औचित्य सिद्ध के तर्क तलाशते है। मगर इस तरह की कथित सैद्धांतिक और दार्शनिक उलझनो को भारत मे भ्रष्टाचार के मौजूदा विमर्श मे अभी केन्द्र मे नही लाया गया है। हालांकि चाहे अनचाहे हर कोई अलग अलग तरह से कभी दबे छिपे तो कभी मुखर रूप से इसे व्यक्त करने मे लगा है। जैसा कि कुछ दिनो पहले पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि अगर गांधी जी भी आज की राजनीति मे होते तो उन्होने भ्रष्टाचार से समझौता कर लिया होता । लेकिन सवाल है कि वे इस राजनीति मे क्यो होते? अगर वे जीवित होते तो इसी राजनीति का हिस्सा बनना चाहते या वे इसे आमूल बदलने की कोशिश करते? दूसरी बात यह है कि क्या आज की राजनीति ऐसी हो चुकी है कि भ्रष्ट होने या भ्रष्टाचार से समझौता करने के लिये मजबूर कर रही है?

अगर ऐसा है तो फिर इस राजनीति को ही बदलने यानी वैकल्पिक राजनीति की बात क्यो नही हो पा रही है? ऐसी कोई पहल न होना यह बताता है कि मौजूदा राजनीतिक दल नैतिक रूप से चुक गये है। उन्होने बस चुनाव को ही लोकतंत्र का पर्याय मान लिया है । राजनेता विरोधी माहौल मे विभिन्न मंचो पर चर्चाओ के दौरान राजनीतिक भ्रष्टाचार से संबंधित सवालो पर आलोचको को चुप करने के लिये जिस दलील से सबसे अधिक सहारा लेते है वह यह है कि आप चुनाव क्यो नही लड लेते?

इसी से मिलता जुलता एक और तर्क खासा प्रचलित है । वह है एक इमानदाराना आध्यात्मिक और अपराधाबोधी लहजे मे यह कहना कि भष्टाचार तो स्वयं हमारे भीतर भरा पडा है और जब तक हममे से प्रत्येक व्यक्ति सदाचार का बीडा नही उठाता तब तक यह नही खत्म हो पायगा। दूसरा यह कि भ्रष्टाचार से निपटने के लिये कानून तो बहुतेरे है लेकिन उनका कार्यान्वयन न हो पाने की वजह से यह खत्म नही हो पा रहा है। एक और तर्क यह दोहराया जा रहा है कि सारे नेता यासारे नौकरशाह भ्रष्ट नही है, इसलिये सबको एक ही पलडे मे तौलना लोकतांत्रिक राजनीति और सरकार की मंशा पर प्रश्नचिन्ह लगाने जैसा होगा जिससे अराजकता फैल सकती है। कुल मिलाकर यह कि भ्रष्टाचार को एक स्तर पर नितांत निजी मामले के रूप मे ऐसे पेश किया जा रहा ह जैसे कुछ व्यक्तियों विशेषकर राजनीतिक और प्रशासनिक ओहदों पर विराजमान व्यक्तियों के नैतिकया कार्यकारी फैसले ही अंतिम रूप से जबाब देह है। तभी तो हाल ही मे लोक सेवा दिवस के अवसर पर हमारे प्रधानमंत्री के संबोधन मे व्यक्तिगत स्वेच्छाचारिता नैतिक साहस सच्चाई के मार्ग से भटक जाने अपने भ्रष्टाचारी सह–अधिकारीयों को बहिष्कृत करने जैसे आचारशास्त्री और उपदेशात्मक पदो की भरमार थी। हो भी क्यो न भ्रष्टाचार को निजी नैतिकता के प्रश्न के रूप मे देखने वालो की कोई कमी नही है।

अब देखिये न अण्णा हजारे के आंदोलन और लोकपाल विधेयक पर साझा समिति के सदस्यों के संदर्भ मे भी सरकार से लेकर नागरिक समाज तक के स्तर पर निजी चरित्र और नैतिकता वाली दलीलो का बोलबाला रहा । एक ऐसे समाज मे जहॉ व्यक्तिगत स्तर पर भ्रष्टाचार की प्रचलित कसौटी पर किसी के भी खरा न उतरने का अंदेशा हो भ्रष्टाचार को लेकर कोई सार्थक बहस कैसे होसकती है? मै भी भ्रष्ट तू भी भ्रष्ट या हम सब चोर है पर एक अन्यमनस्क सहमति के माहौल मे अगर बहस की गुंजाइश हो भी तो निष्कर्ष क्या निकलना है? इसलिये इस बहस को निजी से निकाल कर सार्वजनिकता पर केन्द्रित करना ज्यादा जरूरी जान पडता है । एक घोर विषमता पूर्ण समाज और अत्यधिक केंद्रीकृत राजनीतिक व्यवस्था मे आम इंसान की व्यक्तिगत असुरक्षा जीवित बचे रहने की आखिरी लडाई श्शासन और कायदे कानून की चकरघिन्नी मे उलझ कर रह जाने की उसकी पीडा आदि से उपजे छोटे छोटे भ्रष्टाचार और निर्बाध संस्थाओं द्वारा संगठित रूप से किये जा रहे भ्रष्टाचार को अलग अलग नजरिये से देखने की आवश्यकता है।

इसलिये पहली बात यह कि निजी नैतिकता की कसौटी पर पस्त हो जाने वाले आम आदमी के अपराध बोध को ढाल बनाने की आजादी सत्ता व्यवस्था को हरगिज नही दो जा सकती । दूसरी बात यह कि इसकी आड लेकर आत्म नियमन के तर्क को सरकार और राजनीतिक नेतृत्व तक विस्तारित कर देने की चाल को भी नजर अंदाज नही करना चाहिये। वास्तव मे किसी भी सत्तासीन संस्था से आत्म नियंत्रण की अपेक्षा करना चोर को ही रखवाली का काम सौपने की हद तक का भोलापन होगा।

भ्रष्टाचार पर लगाम लगाने की पहल या आत्म प्रेरणा राजनीति या नौकरशाही के भीतर से अभी या आगे भी क्यो नही आ सकती इसके लिये सत्ता की प्रकृति की गहराई से जांच आवश्यक है। सार्वजनिक जीवन की नैतिकताएँ स्व प्रेरणा से जागृत या प्रभावी नही हो सकती। इसके लिये राजनीतिक संस्थाओं के स्तर पर ऐसे अभिनव प्रयोग और सुधार आवश्यक है जो एक सहभागिता मूलक माहौल मे लोकतांत्रिक आदर्शो को सत्ता और इससे जुडी संस्थाओ के उपर बाध्यकारी अंकुश लगाने की सकारात्मक भूमिका निरंतर लगने की सकारात्मक भूमिका निरंतर अदा करे। कम से कम उनकी निर्दिष्ट भूमिकाओ से उनको वापस जोड सके । इस मामले मे हमारी निश्चिंतता या महज पैबंध लगाने की कवायद हमारे लोकतंत्र के भविष्य को खतरे मे ही डाल रही है।

समीक्षा – मैने आपका लेख जनसत्ता सात मई दो हजार ग्यारह मे पढा। भाषा तो थोडी कठिन है किन्तु विचार इतने संक्षिप्त, सुलझे हुए तथा गंभीर है कि मै स्वयं को समीक्षा से रोक नही सका। मेरे जीवन मे ऐसे लेख कभी कभार ही पढने को मिले है। मै आपसे सहमत हूँ कि

(1) भ्रष्टाचार व्यक्ति की व्यक्तिगत बुराई न होकर संस्थागत बुराई ह। भ्रष्ट से भ्रष्ट विचारों के व्यक्ति की भी भ्रष्टाचार करने की शक्ति राजनैतिक शक्ति पाने के बाद ही बढती है अन्यथा तो उसकी इच्छा दबी ही रह जाती है या मर भी जाती है ।

(2) मै आपके पूरे लेख को विचारार्थ पाठको तक भेज रहा हूँ । पाठको के उत्तर आने के बाद मै समीक्षा करूँगा । आपका नाम तो जनसत्ता मे है किन्तु पता नही लिखा है । यदि आप कही से ज्ञान तत्व पढे या हमारे कोई साथी झा जी का पता या फोन नम्बर उपलब्ध करा सके तो मै उनसे विचारो का आदान प्रदान करना चाहूँगा।

प्रश्नोत्तर

डॉ0 सेवाराम पाल रेडियो कॉलोनी के सामने पन्ना रोड, छतरपुर म0प्र0

कानून के बनने पर कानून के कियान्वयन का यथोचित पालन होना आवश्यक है। राष्ट्रीय परिवेश मे, राजनीति, शासन–प्रशासन और समाज की सभी धाराओं मे भ्रष्टाचार समाहित हो चुका है। इसके निराकरण हेतु विचारणीय बिन्दु हैं, जो इस प्रकार हैं :–

1. भारतीय नागरिक को परिचय पत्र दिया जाये, जिसमें उसकी चल–अचल संपत्ति का विवरण हो।
2. देश के सभी लोक सेवक/जनसेवक के लिये दैनन्दिनी अनिवार्य हो। जिसमें उसके द्वारा किये गये कार्यों का विवरण हो, जो एक मान्य दस्तावेज हो।
3. मुद्रा विनियमन कानून स विमौद्रीकरण करके काला धन समाप्त करने का प्रयास किया जा सकता है। बैंकों मे व्यक्तिगत और संस्थागत मुद्रा रखने की सीमायें निश्चित हों।
4. परिवार नियोजन और अनिवार्य रोजगार योजना का समन्वय हो।
5. कार्यपालिका, व्यवस्थापिका और न्यायपालिका संवैधानिक सीमाओ का अतिकमण न करें।
6. राजनैतिक दलों के पंजीकरण मे संवैधानिक और राष्ट्रीय उद्देश्य अंकित हो तथा इनके कोष पर हस्तांतरण प्रकिया के लिये कम से कम 5 सदस्य निर्धारित हों।
7. सार्वजनिक भूमि, धन और प्राकृतिक स्त्रोतों पर व्यक्तिगत अधिकार न हो। लेकिन उसका व्यक्तिगत प्रयोग किया जा सकता है।
8. पंचायती राज और सहकारी संस्थाओं का शोषण रहित स्वरूप हो। इसमें आचरण की शुद्धता पर ध्यान दिया जाये। परन्तु यदि इन संस्थाओं मे कार्यरत लोग संस्था का शोषण करते हैं तो दण्डनीय अपराध हो तथा सजा के लिये समय सीमा तय हो।
9. अपराध की राजनीति या अपराधी लोगों का संरक्षण करने वाले राजनैतिक दलों पर निर्वाचन आयोग नियंत्रण करे।
10. पट्टा, कोटा और लायसेंस देने के नियम उदारीकृत हों। लेकिन इन व्यवस्थाओं का कियान्वयन अस्थायी और छोटे ठेकेदारी के रूप में हो।
11. तस्करी, चोर बाजारी, कालाबाजारी, कर चोरी और रिश्वतखोरी को राष्ट्रद्रोह की सीमा मे रखा जाये।
12. संचार माध्यमों से आंकडे और व्यवहारिक कार्य मे प्रत्यक्ष संबंध प्रसारित हों, इसके लिये सूचना प्रसारण आयोग सक्षम संस्था हो।

पुस्तक गुलाम राज तंत्रों की आजादी में विकृत शासन तंत्र के आयाम सुझाये गये हैं जिन्हें कानूनी प्रकिया के तहत खत्म किये जाने का प्रयास हो। साम्प्रदायिकता, केन्द्रीयकरण, गोपनीयता का दुरूपयोग, गैर जिम्मेदारी, अकर्मण्यता, अव्यवस्था, तुष्टीकरण, आपराधिक राजनीति और बन्धक पत्रकारिता के दुर्गुणों को कानूनी प्रकिया से और दण्डात्मक विधि से खत्म करने का प्रयास किया जाये। न्यायालयीन कार्य प्रणाली समय सीमा मे पूरी हो। अपीलों की संख्या तय हो।

राजनीतिक दिशाहीनता को खत्म करने के लिये निम्न स्थितियों पर जनहित मे विचार–विमर्श कर उसका प्रचार–प्रसार अच्छी तरह से हो। भ्रष्टाचार की जडों पर कुरोदने के लिये उसके उपरी स्तर से निम्न स्तर तक सफाई के प्रयास किये जाना चाहिये। हमारा प्रचार–प्रसार तंत्र इस दिशा में पहल करे तो संभवतः इस भयानक बुराई को राष्ट्रीय परिवेश में कुछ अंशों तक खत्म किया जा सकता है।

टमक टलंजीपज ठंससइी हंती ए तिपकं इंकए ींतपलंदं

ददपअमतेंतल वि बिमतदवइलसए जव बवदजपदनम ूपजी जीम चतवचवेमक थ्तमदबी.इनपसज दनबसमंत चवूमत चंता ंज श्रंपजंचनत पे ``मतपवने उपेजांम ूपजी सवदह जमतउ पउचसपबंजपवदे वित वनत चमवचसमण[ख1]

।सवदह ूपजी `मअमतंस वजीमते ए चंतजपबपचंजमक पद जीम ष्र्ंतंचनत जव श्रंपजंचनतष ल्जतं ;उंतबीद्ध पद डींतौीजतंए जव चतवजमेज ंहंपदेज जीम चतवचवेमक दनबसमंत चसंदज पद श्रंपजंचनतण[ख2] म कपक दवज तमंबी श्रंपजंचनत इमबंनेम उंदल वि ने ूमतम कमजंपदमकध्ंततमेजमक वित चंतजपबपचंजपदह पद जीपे चमंबमनिस चतवजमेजण[ख3]

प्ज पे ूमसस ।दवूद जींज जीम श्रंपजंचनत दनबसमंत चसंदज पे वद ंद मंतजीुनांम.चतवदम ध्वदम [ख4] ंदक जीम थ्तमदबी म्क्थ् तमंबजवते ींअम दवज लमज इममद जमेजमक ंदलूीमतम पद जीम ूवतसकण[ख5] नतचतपेपदहसल जीम हवअमतदउमदज ीं तमरमबजमक जीम कमउंदके जव बंदबमस जीम चतवरमबजए ूीपबी ूपसस तमेनसज पद जीम सवे वि संदक ंदक सपअमसपीववके वित उंदलण थ्नतजीमतए जीम हवअमतदउमदज ीं ीवूद कपेतमहंतक वित जीम अपमू वि जीम उंदल बपमदजपेजेए ंबंकमउपबेए उपसपजंतल ंदक वजीमत बपजप्रमदे तिवउ जीम तमेज वि जीम बवनदजतल बंससपदह वित ं तमअपमू वि पजे मंतसपमत कमबपेपवदे वद दनबसमंत चवूमत चसंदजेण

।चंतज तिवउ ंददवनदबपदह जीम बतमंजपवद वि ंद पदकमचमदकमदज तमहनसंजवतल इवंतक जव मदेनतम `मिजल `जंदकंतकेए जीम हवअमतदउमदज ीं जांमद दव ंबजपवद वद जीम ूपकमेचतमंक कमउंदक वित ं बवउचसमजम तिमीं तमअपमू वि दनबसमंत मदमतहल चवसपबल पद जीम बवनदजतलण्ॅम दममक जव जमसस च्तपउम डपदपेजमत डंदउवींद ैपदही जींज ीम बंददवज पहदवतम `मतपवने बवदबमतदे तंपेमक इल जीम चमवचसम वि जीपे बवनदजतलण ल्वन ीवनसक `मदक ं गि जव जीम च्ड `ीपदह ीपउ जव `जवच जीम श्रंपजंचनत दनबसमंत चसंदजण

समीक्षा – मै आपके विचारो से पूरी तरह असहमत हूॅ । अंतिम निर्णय के लिये लोकतंत्र मे कोई न कोई व्यवस्था होती है। चाहे विचार मंथन हो अथवा जनमत जागरण अथवा सरकारी निर्णय । लोकतंत्र मे निर्णय को बदलने के लिये सडको पर आना सामान्तया गलत होता है। आणविक उर्जा के संबंध मे वैज्ञानिको मे दो तरह के विचार रहें। और काफी विचार विमर्श के बाद आणविक उर्जा के पक्ष मे सरकार ने निर्णय किया । अब निर्णय के बाद आप सडक पर उतरे यह लोकतंत्र की मर्यादा के खिलाफ है। आप जनमत जागरण के लिये सडक पर उतरते हो तब तो कोई बात नही किन्तु कार्य मे बाधा उत्पन्न करना उचित नही है जैसा कि जैतपुर मे हुआ। प्रधानमंत्री जी बधाई के पात्र है कि उन्होने दो टूक निर्णय किया। अन्यथा भारत मे तो हर मामले मे दो गुट बनाकर उलझाने और लटकाने का रिवाज ही चल पडा है। मै प्रधानमंत्री के निर्णय से सहमत हूॅ । कही न कही तो अन्तिम निर्णय होना ही चाहिये जो उन्होने कर दिया।

काश इंडिया मे मेरी टिप्पणी

ओसामा का दफनाना और दिग्विजय सिंह–

कुछ माह पूर्व दिग्विजय सिंह जी ने कहा था कि आंतकवादी सिर्फ आतंकवादी ही होता है । उसका कोई धर्म नही होता। किसी आतंकवादी को किसी धर्म के साथ जोडना गलत है

दिग्विजय सिंह जी ने ओसामा को समुद्र मे फेकने के बाद कहा है कि चाहे कोई व्यक्ति कितना भी बडा आतंकवादी क्यो न हो किन्तु मृत्यु के बाद उसे धर्म के ही रीति रिवाज के अनुसार दफनाना चाहिये।

अब प्रश्न उठता है कि दिग्विजय सिंह की नजर मे ओसामा जब तक जीवित था तब तक मुसलमान था या आतंकवादी? यदि वह मुसलमान था तब तो वह मुस्लिम आतंकवादी था । अन्य मुसलमानो को उसके कृत्य पर सफाई देनी ही होगी क्योकि वह आज तक इस्लामिक परिवार का सदस्य है जिसे अन्य मुसलमान भी स्वीकार करते हैं। किन्तु यदि ओसामा मुस्लिम परिवार का विश्वास खोकर आतंकवादी हो गया तो उसका धर्म बदल गया। अब उसकी लाश तेा मुसलमान रही नहीं । जो मुसलमान या हिन्दु ओसामा की लाश की चिन्ता कर रहे है उनका धर्म और ओसामा का धर्म एक मानना चाहिये जो है आतंकवाद । मै कुछ पाकिस्तानी और कुछ भारतीय मुसलमानो की पीडा तो समझता हूॅ कि उनका नेता मारा गया किन्तु मै दिग्विजय जी की पीडा नही समझ सका कि उनकी नजर मे ओसामा की लाश को मुसलमान मानकर व्यवहार करें या आतंकवादी। मेरे विचार मे तो ओसामा कब का धर्म छोडकर आतंकवादी बन चुका था और अमेरिका को क्या अधिकार था कि वह उसे मुसलमान मानकर उसकी लाश के साथ धार्मिक व्यवहार करे।अमेरिका को अपनी भूल स्वीकार करनी चाहिये कि दिग्विजय जी के कहे अनुसार आतंकवादी का कोई धर्म नही होता। जब जीवित मू उसका धर्म नही था तो मरने पर उसकी लाश भी किसी धर्म की नही थी और उसकी लाश के साथ वैसा व्यवहार होना चाहिये था जैसा किसी आतंकवादी का होता है। दिग्विजय सिंह जी हमेशा आतंकवाद के साथ जुडे रहे है। यदि उन्होने ओसामा को ओसामा जी कहकर संबोधित किया तो इससे कोई आश्चर्य क्यो ? हर कोई अपने साथी को सम्मान तो देता ही है चाहे वह जिन्दा हो या मरा।

पेट्रोल की मूल्य वृद्धि एक सराहनीय कदम

जबसे मनमोहन प्रधानमंत्री बने है तबसे लगातार पेट्रोल डीजल के दाम धीरे धीरे बढाते जा रहे है। श्यद्यपि यह मूल्य वृद्धि बहुत धीरे धीरे और कम है किन्तु इतने विरोध के बाद भी पेट्रोल की कीमत बढाना हिम्मत का काम तो है ही। मूल्य बढते ही सभी सम्पन्न लोग हल्ला करने लगे है। मीडीया तो छाती पीट पीटकर चिल्ला रहा है किन्तु प्रधानमंत्री अटल है। इसके दस वर्ष पूर्व भो अटल जी ने पेट्रोल को नियंत्रण मुक्त किया था किन्तु सम्पन्नो के दबाव के सामने वे अटल न रहकर टल गये। वैसे ही दबाव अब फिर बन रहा है। मीडिया तो ऐसे छाती पीट पीटकर चिल्ला रहा है जैसे कोई अनहोनी घटना हो गई हो। अनाज कपडा दवा साइकिल पर लगने वाले टैक्स केलिये कभी मीडिया नही चिल्लाता। अभी अभी इसी वर्ष भारत सरकार ने आवश्यक उपभोक्ता वस्तुओ सहित अनेक वस्तुओ पर टैक्स चार प्रतिशत से बढाकर पांच कर दिया। मीडिया ने कोई हल्ला नहीं किया । कोई गरीब

एक साइकिल खरीदे तो चार सौ रूपया सरकार को टैक्स दे और पेट्रोल पर टैक्स बढे तो मीडिया आसमान सर पर उठा ले । भाजपा वाले तो विरोध करेंगे ही। वे कोई पहली बात तो पेट्रोल की मूल्य वृद्धि का विरोध नहीं कर रहे हैं । जब जब पेट्रोल के दाम बढते है तब तब भाजपाई सडक पर साइकिल या बैलगाडी का नाटक करते है। जितना ही ये नाटक करते है उतने ही इनके वोट घटते जाते है।

प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह का नाम भले ही अटल न हो किन्तु उन्हे अपने निर्णय पर अटल रहना चाहिये। मेरा तो यह भी सुझाव है कि प्रधानमंत्री डीजल को भी नियंत्रण मुक्त कर दें क्योकि

कृत्रिम उर्जा सस्ती हो , यह बहुत बडा षडयत्र है

श्रम का शोषण करने का यह पूजीवादी मंत्र है।

अपनो से अपनी बात

ज्ञान यज्ञ परिवार ऐसे व्यक्तियों का समूह है जो यह मानता है कि

(1) समाज की सामाजिक व्यवस्था मे बढता राजनीतिक हस्तक्षेप समाज की समस्याओं का जितना समाधान कर रहा है उससे कई गुना समस्याएँ पैदा कर रहा है अथवा बढा रहा है।

(2) वर्ग निर्माण वर्ग विद्वेष सिद्धान्त रूप से घातक है। वर्ग मुक्त समाज बनना चाहिये। यदि वर्ग मुक्ति संभव न हो तो वर्ग समन्वय हो सकता है किन्तु विद्वेष नही।

(3) परिवार व्यवस्था टूट नही रही है बल्कि योजना पूर्वक तोडी जा रही है।

(4) हम निरंतर यह प्रयास करें कि राजनैतिक व्यवस्था सुरक्षा और न्याय की दिशा मे बढे तथा अन्य सामाजिक मामलों मे राज्य का हस्तक्षेप कम सें कम हो।

(5) लोक तंत्र की वर्तमान परिभाषा लोक नियुक्त तंत्र से निकलकर लोक नियंत्रित तंत्र की दिशा मे बढे।

(6) वर्तमान समय मे ज्ञान यज्ञ परिवार सम्पूर्ण भारत में ऐसा सामाजिक समूह है जो समाज और राज्य के आपसी सम्बंधो एवं सीमाओं पर व्यापक समझ रखता है। वर्तमान समय मे ऐसा कोई अन्य समूह नही।

ज्ञान यज्ञ परिवार की पहली सफलता होगी यदि भिन्न संगठनो भिन्न विचारो के लोग एक साथ बैठने की शुरूआत करें। इससे आपसी समझबूझ बढेगी तथा भेद की दीवारे टूटेगी।हम सब साथियो को अपना मनोबल उॅचा रखना चाहिये कि वर्तमान समय मे इस विषय पर सोचने वाले समूहों मे ज्ञान यज्ञ परिवार या तो अकेला है या सबसे अधिक सक्रिय है। हम सब साथियों को और अधिक सक्रिय होना चाहिये।

सक्रियता की पहली सीढी मात्र यही है कि आप अपने यहॉ ज्ञान यज्ञ परिवार का गठन करें। इसके लिये आप कम से कम पचीस ऐसे नाम कार्यालय को भेजें जो (1) ज्ञान तत्व पढ सकते हो

(2) कम से कम वर्ष मे एक बार आपकी बैठक मे आने हेतु सहमत हो।

इस सदस्यता का कोई शुल्क नही है। ज्ञान तत्व पाक्षिक का शुल्क भी स्वैच्छिक ही है, आवश्यक नहीं। इस बैठक में भी वैचारिक चर्चा ही होगी। बैठक मे मै भी रहूॅगां। इस तरह ज्ञान यज्ञ परिवार का काम शुरू हो सकता है।

आप ज्ञान तत्व के पाठक है । पचीस नाम भेजकर उनसे सम्पर्क बना रहे इतना ही पर्याप्त है। काम बहुत आसान है। न कोई ज्यादा खर्चीला है न ज्यादा परिश्रम का । वर्ष मे एक बार कही बैठकर मेरे साथ चर्चा हो जायगी। बस इतना ही प्रारंभिक कार्य है। आप यह काम आसानी से कर सकते है।जो साथी अब तक नाम नही भेज सके है वो नाम की सूची भेजने की कृपा करे । जो साथी उक्त सूची के आधार पर ज्ञान यज्ञ परिवार केन्द्र बना सकते हो वे अपनी सहमति भी भेजे तभी आपका नाम केन्द्र प्रमुख के रूप मे घोषित होगा अन्यथा आपकी सूची ज्ञान तत्व मे जुड जायगी। केन्द्र प्रमुख के लिये यह भी आवश्यक है किउनकी सूची मे कम से कम पचीस नाम ऐसे स्थानीय हो जो आपकी सूचना पर वर्ष मे एक बार बैठक मे आ सकें।

आशा है कि आप स्वयं को केन्द्र प्रमुख घोषित करने की सूचना देने की कृपा करेंगे। यह भी उल्लेखनीय है कि हमारे कार्यो से प्रभावित होकर ओमपाल जी मेरठ उ0 प्र0 , नरेन्द्र जी बुलंद शहर उ0 प्र0 तथा ए. पी. द्विवेदी जी रीवा म0 प्र0 ने संगठन सचिव का कार्य भार सम्हाल लिया है। अब वे देश भर का भ्रमण करेंगें । ओमपाल जी उ0 प्र0 के दौरे पर है तथा द्विवेदी जी म0 प्र0 बिहार के दौरे पर है। नरेन्द्र जी भी जुलाई से दौरा शुरू करेंगें । आप सबसे सहयोग की अपेक्षा है।

उत्तरार्ध

अन्ना हजारेजी नें नौ अप्रेल को लोक स्वराज्य की दिशा मे पहला कदम बढाकर सफलता प्राप्त की है। हमारे लिये यह ऐतिहासिक महत्व का दिन है। जय प्रकाश आंदोलन से भी ज्यादा महत्वपूर्ण । हमलोगो ने तय किया है कि ज्ञान यज्ञ परिवार नौ अप्रेल की छमाही की यादगार मे नौ अक्टूबर 2011 को जंतर मंतर पर दीप जलाकर ठाकुर दास जी बंग जिन्होने जीवन भर लोक स्वराज्य की दिशा मे संघर्ष किया तथा अन्ना जी तथा उनके साथियो को धन्यवाद ज्ञापित करेंगें। साथ ही हम नौ अक्टूबर तथा दस अक्टूबर को दिल्ली की धर्मशाला मे बैठकर आगे की योजना पर भी चर्चा करेंगें। हम आप सबसे निवेदन करते है कि आप नौ तथा दस अक्टूबर को दिल्ली पहुॅचने की कृपा करें। संपूर्ण व्यवस्था का दायित्व श्री सुरेश जी तथा ओम प्रकाश जी दुवे ने स्वीकार किया है ।